ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-6* July - 2017
Innovation The Research Concept

फणीश्वर नाथ रेणु और ताराशंकर के उपन्यासों में मानवीय सम्बन्धों का विश्लेषण

मंजूलता बेहेरा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
वर्धमान विश्वविद्यालय,
वर्धमान, पश्चिम बंगाल

सारांश

कोई भी कथाकार और कलाकार सर्वप्रथम एक मनुष्य होता है उसके पश्चात् ही वह लेखक, कलाकार, साहित्यकार बनता है। वह प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक एवं धार्मिक अनुभवों को कल्पना और अपनी भावना के साथ जोड़ता है फिर उन भावनाओं को भाषिक रूप देकर उन्हें व्यक्त करता है। फणीश्वरनाथ रेणु और ताराशंकर बंद्योपाध्याय भी अपवाद नहीं हैं। वे पहले मानव हैं, फिर कलाकार या साहित्यकार। दोनों कथाकारों ने भोगे हुए मानवीय क्रिया कलाप, और देखे हुए मानवीय सम्बन्धो का वर्णन अपनी रचनाओं में किया। उनके सम्बन्धों को विविध परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया, जैसे– पति–पत्नी का सम्बन्ध, प्रेमी–प्रेमिका का सम्बन्ध, पारिवारिक सम्बन्ध, राष्ट्रीयता के संदर्भ में बने मानवीय सम्बन्ध, सामाजिक मानवीय सम्बन्ध, प्रकृति का मानवीय सम्बन्ध, अन्य सम्बन्ध इत्यादि।

मनुष्य में एक संवेदनशील हृदय होता है वह अनुभव करता है और मस्तिष्क उसका विचार प्रस्तुत करता है। दोनों के योग से एक विचार तैयार होता है जिसे लेखक प्रस्तुत करता है। ताराशंकर बंद्योपाध्याय और फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने अनुभवों को वाणी देकर अपने हृदय के दर्द को व्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य के उपन्यासों के विकास पर दृष्टिपात करने पर प्रेमचन्द यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय, भैरव प्रसाद गुप्त, इलाचंद्रजोशी आदि नजर आते हैं लेकिन रेणु उनकी परम्परा से हटकर लेखन करते हुऐ भी उनकी परम्परा में नजर आते हैं। आचंलिक उपन्यास में ग्रामीण परिवेश में मानवीय संवेदनाओं का सुदंर वर्णन करते हैं। प्रेमचंद के 'गोदान', 'गबन', 'कफन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि' आदि उपन्यास में ग्रामीण परिवेश का चित्रण है और उसमें मानव मन के हर स्तर की कलात्मक विवृत्ति भी। फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में भी मानव मन का उसके सम्बन्धों का, एवं मानवीय संवेदनाओं का वर्णन हुआ है। बंगला साहित्य में शरतचन्द्र, बकिमचन्द्र, विभूतिभूषण, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जीवानान्द दास आदि साहित्यकारों ने भी मानव सम्बन्धों एवं मानव मन को अधिक महत्व दिया है। फ्रायड् या युंग के सिद्धांन्तों का पालन भले ही कम से कम हुआ है लेकिन उपन्यास कथाओं में कहीं भी इसकी कमी महसूस नहीं होती है। दोनों रचनाकार मानव को सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हैं एवं मानव सम्बन्धो पर पैनी दृष्टि डालते हैं।

मुख्य शब्द : मानवीय, सम्बन्ध, राष्ट्रीयता, आंचलिकता, मनोविज्ञान, सामाजिकता, मातृभूमि प्रेम, जीवन–संघर्ष, नियम–परम्परा का निर्वाह

प्रस्तावना

हिन्दी एवं बंगला साहित्य में एक विशिष्ट कथायुग के निर्माता हैं। फणीश्वरनाथ रेणु और ताराशंकर बंद्योपाध्याय हिन्दी एवं बंगला साहित्य के आंचलिक उपन्यासकार हैं। दोनों मानव सम्बन्धों के प्रति संवेदनशील हैं। उपन्यास गद्य विद्या की सबसे पसंदीदा विद्या है। यह विद्या साहित्यकार को जितना आकर्षित करता है उतना ही पाठक को भी आकृष्ट करता है। वे अपने भावों को उनमें ढूँढ़ लेते हैं।

हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में मानव सम्बन्धों को विशेष महत्व दिया गया है। प्रेम सम्बन्ध, मातृत्व, पिता–पुत्र का सम्बन्ध, मालिक–नौकर, सत्ताधारी नेता एवं जनसाधरण, उच्चवर्ग के मानव और निम्न वर्ग के मानव सम्बन्धों के बारे में बताया गया है। हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द ने प्राकृतिक मानव सम्बन्धों का वर्णन यथार्थ के स्तर पर किया है इसी परम्परा के पथिक हैं फणीश्वरनाथ रेणु। बंगला साहित्य में शरतचन्द्र एवं रवीन्द्रनाथ ने मानव मनः स्थिति पर अधिक ध्यान दिया है ठीक उसी का उत्तरसुरी रूप है ताराशंकर बंद्योपाध्याय। ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु दोनों कथाकार अपने–अपने क्षेत्रों के प्रयोग में

बिल्कुल सफल रहे हैं। दोनों के प्रयोगों का समानान्तर विकास हिन्दी एवं बंगला साहित्य में सहज ही लक्षित किया जा सकता है। हिन्दी एवं बंगला साहित्य में दोनों कथाकार ग्रामीण एवं नागरी जीवन के विभिन्न मनः स्थितियों का वर्णन बहुत ही सुन्दरता के साथ किया है। दोनों रचनाकार अपनी अनुभवी एवं पारखी –दृष्टिकोण से मानव मन को देखने की चेष्टा की है। दोनों रचनाकार उनके मन के मानविक पक्ष ही नहीं अमानविक पक्ष का भी वर्णन किया है। मन कोई स्थिर वस्तु नहीं है उसमें परिवर्तन स्वाभाविक है और समाज के प्रति प्रतिबद्ध कलाकार की रचनाओं में तदनुरूपता का परिलक्षित होना सहज है। मानव मनः स्थितियों की तद्गतता की प्रेरणा रचनाकार का संवल होती है। उनका हर्ष–विषाद, सुःख–दुःख, शांत–चंचल,भला–बुरा ,न्याय–अन्याय इत्यादि क्रिया–कलाप लेखक को सोचने के लिए बाध्य कर देता है। वे ही क्षण उनकी सृजनात्मकता के साँचे में ढलते हैं। दोनों ही कथाकार मानव मन के आर्तनाद, व्यथित जीवन का सपाट वर्णन करते हैं। उनके विविध रूप, विभिन्न स्थिति एवं अन्तर्व्यथाएँ, विविध क्रिया–कलाप, ही उनकी रचनाओं में सन्निहित होते हैं।

विषय

फणीश्वरनाथ रेणु और ताराशंकर बंद्योपाध्याय दोनों लेखक के पहले एक मानव हैं, मानवता की पूजा करते हैं। किसी भी प्रकार का बंधन उन्हें स्वीकार नहीं। दोनों लेखकों का व्यक्तित्व बचपन से ही मस्तमौला रहा है। ताराशंकर अभिजात्य परिवार से होने के कारण थोड़ा शांत स्वभाव के थे वही रेणु चंचल और मस्ती लुटाने वाले मनुष्य हैं।

ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु दोनों ही आँचलिक उपन्यासकार हैं। दोनों ने ही अंचल विशेष के गांव का ही चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। मनोविज्ञान का सम्बन्ध मनुष्य के मस्तिष्क से है।

मनुष्य का मन विचार–विनिमय के बिना स्थिर नहीं रह सकता। इसलिए यह कहना अतियुक्ति नहीं होगा कि मनुष्य का विचार ही जीवन है। विचार अपनी क्रियान्विती में सफल होता हैं। विचार और उसके मूल्य ही विश्व का निर्माण करते हैं। इनके विभिन्न परिप्रेक्ष्य, विविध पहलू होते हैं। रागातत्वपरक वैचारिकता में वह अकेला रह नहीं पाता है। स्वाभाविक रूप में उसकी अपनी एक समांतर दुनिया होती है और उस दुनिया में वह अपनेपन की खोज करता है। बाहरी सुरक्षा एवं आंतरिक रागतत्व के कारण अन्य मनुष्य से उसके सम्बन्धों की जरूरत पड़ती है। लेकिन वास्तव में 'मनुष्य' उसके सम्बन्धों के परम्परा का ही तो विकास है। उसके सम्बन्धों की दुनियाँ माँ–बाप, भाई–बहन, पति–पत्नी, प्रेमी–प्रेयसी के अतिरिक्त मनुष्यत्तर प्राणी एवं अप्राणी जगत से भी उसका रागात्मक सम्बन्ध होता है। देखना होगा फणीश्वरनाथ रेणु एवं ताराशंकर बंद्योपाध्यय के उपन्यासों में इसका निर्वाह किस कदर हुआ है।

समाज के निर्माण में किसी भी विशेष मान्यता की पृष्ठभूमि होती है। मानवीय, स्थानीय एवं सामाजिक स्वरूप की स्थापना एवं संचालन के लिए इस तरह की संस्थायें बनती है। इस तरह की संस्था बनाकर ही इस प्रथा को मूल्य के रूप में स्वीकारोक्ति मांगी जाती है। जब कोई परम्परा मनुष्य के विकास अथवा उसकी स्वतंत्रता का विरोधी बनता है तब उसे तोड़ने की जरूरत पड़ती है। मगर स्वयं सामाजिक नियमों का निर्माता उसके बंधन में जकड़ जाता है तो उस बंधन को तोड़ने का साहस उसमें रहना आवश्यक हो जाता है। यह साहस सबमें नहीं होता है। जो इसको तोड़ने का साहस करता है वह परिवर्त्तन लाता है, मुक्त करके जीत हासिल करता है लेकिन जो इसको तोड़ने का साहस नहीं दिखाता उसका घूट–घूट कर मरना ही उसकी नियति बन जाता है और जो कोई इसको तोड़ सका एवं समाज का विरोध साहस के साथ कर सका वह मिशाल बन जाते है। इस तरह के पात्र ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में उपलब्ध है। यह दोनों लेखकों की खास उपलब्धी है। ताराशंकर बंद्योपाध्याय की विख्यात उपन्यास 'हाँसुली बांकेर उपकथा' का मुख्य पात्र इसका अन्यतम उदाहरण है। कराली अनाथ है उसका भौतिक जगत से संघर्ष शैशवकाल से ही है। वह शुरू से अन्त तक संघर्षरत दिखाई पड़ता है। पुरानी मान्यताओं को तोड़कर नयी आधुनिक एवं स्वस्थ मान्यताओं को अपनाने के लिए संघर्ष करता है। कभी समाज से तो कभी अपने–आप से यह संघर्ष जारी रखता है। वह साँप को मार कर अंध विश्वास का विरोध करता है। इस तरह मानवीय चेतना को सजग करने की कोशिश करता है। समाज में मानवीय सम्बन्धों को स्थापित करता है। बनवारी की देख–रेख में उसी गांव में पलता है और आधुनिक सोच का वाहक बन जाता है।

फणीश्वरनाथ रेणु के विख्यात उपन्यास 'मैला–आंचल' का मुख्य पात्र डॉ० प्रशान्त भी इसी तरह का नजीर गढ़ता है। मानवीय संवेदना के कारण वह मेरीगंज गांव रहकर प्रेम की खेती करना चाहता है। 'गरीबी' और 'जहालत' जैसी बिमारी का निर्मूल नाश करना चाहता है। वह भी अनाथ है। लेकिन गांव के प्रत्येक व्यक्ति एवं समाज के साथ उसका अद्भुत लगाव होता है।

ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु का अपने मातृभूमि के प्रेम ही उनकी मानवीय संवेदना का प्रमाण है। जिसके कारण मानवीय सम्बन्ध का विस्तृत वर्णन हो पाया है हर मानवीय सम्बन्धों की तह तक पहुँचने की कोशिश की गई है।

ताराशंकर बंद्योपाध्याय राढ़ अंचल की कठोर भूमि में पले–बढ़े थे वहीं फणीश्वरनाथ रेणु निपट गांव में पले बढ़े थे। दोनों का अलग–अलग अंचल होने पर भी जीवन का अनुभव प्रायः एक समान ही था। दोनों लेखक संघर्षशील मजदूर वर्ग के लोगों की व्यथा कथा कहते हैं। ताराशंकर बंद्योपाध्याय राढ़ अंचल के कठिन जीवन एवं संघर्ष पूर्ण जीवन का वर्णन करते हुए उनके मानव सम्बन्धों एवं मानव मूल्यों का वर्णन भी बड़े ही संवेदनशीलता के साथ करते है। वहीं फणीश्वर नाथ रेणु पूणिया जिले के मेरीगंज गांव के रहने वाले पिछड़े जन–जाति के लोगों की संघर्षशील एवं उपेक्षित जीवन की वर्णन करते हैं। दोनों कथाकार उन अत्यंत गरीब, अशिक्षित एवं अंधविश्वासी छोटी जाति वालों जैसे बाउरी,

डोम, चमार आदिवासी आदि की कथा लिखते हुए उनके मानवीय सम्बन्ध एवं मानवता का चित्रण करते हैं।

ताराशंकर की साहित्यिक दृष्टि मानवीयता के उदात्त आदर्शों से युक्त है। मानव जाति पर उनका अगाध विश्वास है। रेणु की तरह वह भी रामकृष्ण परमहंस के आदर्श, "सबार ऊपरे मानुष सत्य ताहार ऊपरे नाई केऊ" को मानकर चलते है। इसलिए दोनों रचनाकारों ने साहित्य का विषय मूलतः उपेक्षित, पिछड़ी प्रताड़ित क्षेत्रों के लोगों के जीवन को बनाया। इसका मूल कारण इनके मानव सम्बन्धों को समझना और बताना क्योंकि मानव सम्बन्धों की विविधता इन्हीं लोगों में अधिक देखी जा सकती है। इनके पास यहीं मानव सम्बन्ध ही सम्पदा होती है। लोक–जीवन और विज्ञान, लोक–संस्कृति और आधुनिकता से पुष्ट उनका मानवीय जीवन–दर्शन भारतीय ग्रामीण समाज के यथार्थ को अभिव्यक्त करने में मददगार साबित हुई है।

ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में समाज के हर–रीति–रिवाज, नियम, परम्परा, सामाजिक, सम्बन्धों, सामाजिक स्तर एवं समाज में रहने वाले उपेक्षित जाति के लोगों का वर्णन हुआ है। उनके मानवीय सम्बन्धों को बड़े ही बारीकी से देखा गया है एवं बारीकि से उनका चित्रण भी किया गया है।

भारतीय समाज में विवाह सदैव से ही एक धार्मिक एवं पवित्र बंधन माना गया है। ऐसा कहा जाता है ईश्वर ही वर–वधू की जोड़ी तैयार करके भेजता है। विवाह परिवार की मूलभूत इकाई है। लेकिन समय और संदर्भ के साथ इसमें परिवर्त्तन भी होते रहे है एवं इनमें समयानुसार विविधता भी आई है।

नारी और पुरूष के यौन सम्बन्धों को सामाजिक मान्यता देता है विवाह। नारी और पुरूषों के मध्य यह सम्बन्ध एक सामाजिक समझौता है। जिसे जीवन भर निभाना पड़ता है। यौन सम्बन्ध का एक निंबध है जो स्वेच्छा पर नहीं रहता है। विवाह के पश्चात इच्छा के विरूद्ध सहवास का तब कोई प्रतिवाद नहीं हो सकता। सामाजिक आधार पर यह थोपी गयी परम्परा बहुत दुःखदायी एवं लज्जाजनक होती है लेकिन सामाजिक रूप से यह समाज व्यवस्था का एक अंग है जो नियम श्रृंखला में बंधे रहने के लिए किया गया था जिससे एक–दूसरे का साथ बना रहे। कोई अवैध सम्बन्ध न पनप पाये एवं इन सम्बन्धों की संवेदनाओं को समझ सके।

ताराशंकर बंद्योपाध्याय और फणीश्वरनाथ रेणु दोनों ही अपनी रचनाओं में इस परम्परा को निभाते हुए उसके वैध–अवैध दोनों रूपों का वर्णन किया है। इसके अलावा अन्य पक्षों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है। गणदेवता का 'देबू' बिल्लो से शादी करता है, एक बेटी भी है, लेकिन बिल्लो के मरने के बाद दूसरी शादी नहीं करता है। पति छोड़कर चले जाने के बाद पद्य बहू उसके साथ रहने पर भी देबू उसे बड़े सम्मान देकर रखता है। जहाँ यह स्वरूप और भद्र सम्बन्ध ताराशंकर अपनी रचना में प्रस्तुत करते है वही दूसरी ओर 'हाँसूली बांकेर उपकथा' उपन्यास में नारी–पुरूष के अवैध सम्बन्ध को दर्शाते है। बनवारी शादी के बाद भी कालोबहू के प्रति आसक्त रहता है कराली और पाखी के प्रेम अंत तक शादी के बंधन में नहीं बंध पाता है, सुवासी कराली से शादी कर लेती है पाखी को अन्ततः आत्महत्या करना पड़ता है। इनका सम्बन्ध अवैध होते हुए भी उनके समाज में वैध माना जाता है। मनुष्य के जीवन में यौन एक गहन और शाश्वत आवश्यकता है। मनुष्य हो या पशु–जैविकता सब में मौजूद है। यह एक भूख जिसकी तृप्ति प्रेम में, शारीरिक सम्बन्धों के निर्वाह में होती है। किन्तु यही परितृप्ति यौन विकृति हो जाती है जब अवैध रूप से पूर्ण होती है। ग्रामीण परिवेश प्रकृति तथा पशु–पक्षियों का खुला रंग स्थान ही जहाँ वे बिना रोक–टोक अपनी यौन आवश्यकताओं की पूर्ति कर तृप्ति पाते है किन्तु मानवीय जीवन के संदर्भ में इस पर सामाजिक रीतियों एवं परम्पराओं के पाबंध है।

'परती–परिकथा' उपन्यास के पात्र ताजमनी और जित्तन का प्रेम इन्हीं सामाजिक रीतियों के बंधन में जकड़कर रह जता है अन्त तक विवाह की सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पाती है। 'मैला–आंचल' की लक्ष्मी बालदेव से प्रेम तो करती है लेकिन विवाह नहीं हो पाता है। दुर्गा या पद्य बहू देबू से विवाह नहीं करती है उनके प्रेम को श्रद्धा का रूप दिया है। रेणु इस तरह के प्रणय सम्बन्ध को स्वच्छन्द कुंठित प्रेम के रूप में प्रस्तुत करते है ताकि सामाजिक नियमों का उलंघन न हो। आधुनिकता के आधार पर इस सम्बन्धों को स्वच्छ सम्बन्ध में परिणत करने की कोशिश करते है। फिर भी ग्रामीण यथार्थ के चित्रण में यह परम्परा टूट जाती है।

फणीश्वरनाथ ने मानवीय सम्बन्धों के वैध की अपेक्षा अवैध सम्बन्धों विश्लेषण किया है। जो अशिक्षित ग्रामीण लोगों के समाज का एक अंग है जिसे वे लोग 'रंग' शब्द से सम्बोधन करते है। गांव के जीवन का यह वास्तविक रूप है जिसका खुला चित्रण दोनों लेखको ने किया है। यह अवैध सम्बन्ध सामाजिक दृष्टि से भले ही अनैतिक है लेकिन उन उपेक्षित और अशिक्षित लोगों को हर विपरीत परिस्थिति में जीवन्तता भी प्रदान करता है जीने की इच्छा जागृत करता है। इन अवैध यौन संबधों को दैव्य इच्छा समझा जाता है। अंधविश्वास और रूढ़िवादी परम्परा में यह मानव सम्बन्ध पलता है। उनके समाज में यह अवैध नहीं वैध होता है उसी समाज के अर्न्तगत ये लोग अपना जीवन जीते है और परम्परा को निभाते है। उनका यह मानना है, इनके पीछे कोई सामंती शासन और प्रश्रय या सामंती इच्छा नीति नहीं बल्कि दैव्य इच्छा है। देवता के इच्छा के सामने वे पूर्ण समर्पित होते है। इन्द्रिय लालसा को आनंद के साथ मान लेते है। जो वर्ग इनको दास समझता है ये लोग उन्हीं की पूजा करते हैं। सब कुछ दैव्य विधान के अनुरूप घटित हो रहा है ये मानकर अपने आप को भूला देते है। उनके लिए इनके मन में अजीब सी श्रद्धा हमेशा बनी रहती है। यह मनोभाव और दासमूलक प्रवृति और अज्ञान के कारण है। इनकी सुरा प्रवृत्ति, अवैध यौन सम्बन्ध, लालसा, कामवासना सब कुछ विधि का विधान है जो देवताओं ने तय किया है इसलिए नीच जाति में जन्म हुआ है। इसलिए यह पाप नहीं अनुचित नहीं है विवेक के विरूद्ध नहीं है। इस तरह से मानव मन की सूक्ष्मता को समझने वाले कोई मनोवैज्ञानिक नहीं बल्कि ग्रामीण आंचलिक उपन्यासकार

ताराशंकर बंद्योपाध्याय और फणीश्वरनाथ रेणु हैं। मैला–आंचल में कमली का डॉ० प्रशांत के साथ, तहसीलदार हरगौरी सिंह अपनी खास ममेरी बहन के साथ, बालदेव कोठारिन लक्ष्मी के साथ, काली चरण का चरखा सेंटर की मास्टरनी मंगला के साथ महंत सेवादास का लक्ष्मी दासिन के साथ सम्बन्ध अनैतिक और अवैध सम्पक दिखाते है। यहाँ तक कि रामदास भी लक्ष्मी दासिन को पाना चाहता है, "महन्त एक बार चार दिन के लिए पुरनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात को लछमी चैन से सो सकेगी। ले बलैया। बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुंह में गई। उसके बाद लक्ष्मी ऐसी बीमार हुई कि मरते–मरते बची।"[1] लक्ष्मी जैसे पात्र के माध्यम से रेणु आज के मानव सम्बन्ध के नग्न रूप को दर्शाते है। फणीश्वरनाथ रेणु गांव के इस अनैतिक वास्तविकता को बताने में थोड़ा भी हिचकिचाते नहीं है। लेकिन कुछ साकारात्मक पक्ष के द्वारा वैध सम्बन्ध भी दिखाते है। डॉ० प्रशांत और कमली का विवाह अंत तक वैध हो जाता है। लक्ष्मी मानव सम्बन्ध के कई रूपों को दर्शाती है, एक गुरू भाई बेटी, महंत सेवा दास की रखेल, बालदेव की प्रेयसी, रामदास की दासी, मठ की कोठारिन आदि कई सम्बन्धों को स्थापित करते हुऐ समाज की सच्चाई सामने लाती है। रेणु इन सब मानव सम्बन्धों का चित्रण बड़े ही कलात्मक ढंग से करते है। अशिक्षा और गरीबी के कारण वह शोषित होते है। जमींदार और सामंत वर्ग के साथ इन दलित ग्रामीणों का सम्बन्ध उच्चवर्ग और निम्न वर्ग से तो है ही साथ ही शोषक और शोषित सम्बन्ध भी है जिसे अमानवीय दृष्टि से देखा जाता है।

भारतीय समाज में विधवा जीवन नारी के लिए सबसे बड़ा कलंक रहा है। सती प्रथा पर तो किसी तरह रोक लग जाता है लेकिन विधवा विवाह का प्रचलन नहीं हो पाता है। आज के आधुनिक समाज में भी विधवा विवाह को नीच नजर से ही देखा जाता है। नारी की स्थिति अत्यधिक कुण्ठामय एवं त्रासमय बन गयी है। वही पति द्वारा छोड़ी गई स्त्री या पति को छोड़ कर आने वाली स्त्रियों की दशा भी कम प्रतारण और अमानवीय नहीं है। समाज के साथ इनका सम्बन्ध दृष्टिकटू होता है। 'गणदेवता' में दुर्गा अपने पति को छोड़ कर चली आती है और स्वयं मजदूरी करके अपना जीवन यापन करती है। भाई के पास रहती है देबू के प्रति मन में प्रेम होने पर भी मन में रह जाता है एवं अन्त तक अकेले जीवन जीना पड़ता है। फिर भी समाज के दुष्ट प्रवृति के लोग उन पर हमेशा बुरी नजर बनाये रखते है और मौका पाते ही अपने कामलालसा को अंजाम देते है। इसका जीवन्त उदाहरण गणदेवता का श्री हरि घोष ऊफ छिरूपाल है। पातू कहता, "जी, राम–राम चौधरी जी। मेरी बहन दुजरा शैतान है। शादी कर दी, मगर ससुराल से भाग आयी है। बस यह छिरू पाल उसी पर आँख गड़ाये हैं। कोई बहाना बनाकर टोले में आ जाता हैं और घर के अंदर बैठता है।" ताराशंकर बंद्योपाध्याय ने बड़ी कुशलता के साथ इस अमानवीय सम्बन्धों का वर्णन किया है जो समाज को □ष्ट करते है।

दोनों रचनाकारों ने जाति–भेद तोड़कर मानव सम्पक स्थापित करने की कोशिश किया है– जब खाना बनाने के लिए देबू दुर्गा को कुँआ से पानी निकालने को कहता है तब दुर्गा इंनकार करती है। कहती है "से जातिते ड्रोम, से देबू के तार छोआ जल दिते पारेना से बले ना, से आमि पारबो ना जामाई पण्डित। आमार हातेर जल–कन्कनार बामून–कायेत बाबूरा नूकिये खाय, मदेर संगे जल मिशिये दी, भूखे लास (ग्लास) तुले धारि–तारा दिब्बी खाया से आयी दी– किन्तू तोमा के दिते पारबो ना"–रचनाकार जातिगत विडम्बना के साथ–साथ मानवीय सम्मान को दिखाया है एवं जाति भेद भाव के स्थान पर मानव सम्बन्ध को महत्व दिया है। देबू कहता है,

"जात से माने ना।.....
यतीनेर संस्पर्श से बुझेछे जातिभेद अर्थहीनता।"

दोनों लेखको ने माँ– बेटी और माँ– बेटे के रिश्तों में साकारात्मक और नाकारात्मक पक्ष को दर्शाया है। गणदेवता में दुर्गा की माँ स्वयं छिरू पाल को सौंपना चाहती है हालाँकि छिरूपाल के चरित्र से वह भलि–भाँति परिचित है। यह बात उसका बेटा स्वयं बताता है, "मेरी माँ– उस हरामजादी को तो आप जानते ही है। उसका शुरू से आखिर तक एक ही तरह से बीता है। वह छिरू को विठलाती है, फुसफुस करती है। घर में आखिर मेरी भी धरती है।" मैला–आंचल में कमली की माँ डा० प्रशांत के साथ कमली का विवाह करके प्रसंन्न होती है जबकि डॉ० प्रशांत के जात–कुल का कुछ पता नहीं है। अर्थात् माँ और बेटी के सम्बन्ध के प्यार और स्वार्थ को दिखाते है बेटी की भलाई माँ स्वार्थी भी होती है। समाज में व्याप्त कुछ भ्रष्ट मानवीय सम्बन्धों का चित्रण भी ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु करते है। अनिरूद्ध के शिकायत पर पुलिस निर्दोष गरीब सतीश बाउरी को पकड़ लेती है। "अनिरूद्ध ने छिरू पाल पर संदेह करके नालिश की थी, लेकिन पुलिस ने आकार बैहार जोतनेवाले सतीश बाउरी के घर की खानातलाशी ली और तहस–नहस करके उसे खींच लायी। घण्टों उससे पूछताछ करके उसके नाकों दमकर दिया और अन्त में उसे छोड़ भी दिया। हाँ, छिरू पाल के घर के खलिहान को भी एक बार घूम–घामकर देखा पुलिस ने लेकिन वही दो बीघा जमीन के अधपके धान का एक तिनका भी न मिला।"

ठीक मैला–आंचल में पुलिस वानदास को इस तरह कारावास में डाल देता है।

निष्कर्ष

लेखक युग को अपने से अलग नहीं कर सकता, क्योंकि साहित्य को उपजीव्य सामग्री युग है, प्रदान करता है और साहित्यकार उस युग बोध को संप्रेषित कर एक शाश्वत रसात्मक सृष्टि की रचना करता है। मानव सचेतन, ज्ञानबान और संवेदनशील होने के कारण अपने परिवेश से प्रभावित होकर अपनी अनुभूति को साहित्य के रूप में अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार मानवी परिवेशगत मूल्यों के उद्घाटन का प्रयत्न करता है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों और परिस्थितियों में साहित्यकार के चेतन मन पर पड़े संस्कार ही अचेतन मन में संगृहीत होते रहते है और उपयुक्त समय पाकर अभिव्यक्त होते है।

दोनों रचनाकारों की विचारधारा व्यापक अर्थ में मानवीय और समाजोमुखी है। जीवन के अनुभूत सत्यों का चित्रण उपन्यासों में सहज और स्वाभाविक है। ग्रामवासिनी

भारत माता का अपने संतान के साथ यह सम्बन्ध मानवता का सूचक है। गांव की मिट्टी के प्रति गहरा प्यार ही उनकी मानवीय संवेदना को उजागर करती है। लेखकोद्य ही मनुष्य को जीवन का सबसे बड़ा सत्य मानते है। डॉ० प्रशान्त का ग्रामीणो के साथ सम्बन्ध सिर्फ एक डाक्टर और रोगी का ही नहीं बल्कि मानवता का इंसानियत का संबध है। डॉ० प्रशांत और गणदेवता के 'देबू' की सुन्दर स्वस्थ जीवन की कल्पना लोक कल्याण की भावना ही मानवतावादी भावना को ही उजागर करती है। ग्रामीण समाज में समाज को मानवीय और मनुष्य को सामाजिक बनाना यही वह जीवन–दृष्टि है जो ताराशंकर बंद्योपाध्याय एवं फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में ध्वनित होती है। एक विशाल मानवीय दृष्टिकोण उनके चिन्तन के केन्द्र में है, मानवीय संवेदना ही मुख्य रूप से मुखर हुआ है। तभी तो डॉ० प्रशांत कहता है, 'वहाँ आदमी है कहाँ? सबसे पहला काम है उन्हें मनुष्य बनाना।"

दोनों रचनाकारों के यथार्थ वर्णन में रूढ़ियों की दुर्गन्ध, अशिक्षा, शोषण का वर्णन होते हुए भी मानवीय प्रेम की संवेदना का स्त्रोत मिलता है। जीवन में प्रेम को ही जीवन की सबसे बड़ी संवेदना मानते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मैला आंचल, रेणु रचनावली,भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 पृ०–35*
2. *हाँसुली बाँकेर उपकथा, ताराशंकर बन्द्योपाध्याय, हि० रूपान्तर, हंसकुमार तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1969 पृ०– 34*
3. *गणदेवता, रचनावली:ताराशंकर बन्द्योपाध्याय, मित्र एण्ड घोष पब्लिसर्श प्रा० लि०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण–बैशाख 1380, पृ०– 32*
4. *वही० पृ०–37*
5. *हाँसुली बाँकेर उपकथा, ताराशंकर बन्द्योपाध्याय, हि० रूपान्तर, हंसकुमार तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1969 पृ०–35*
6. *गणदेवता ताराशंकर बन्द्योपाध्याय, हि० रूपान्तर, हंसकुमार तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1969,पृ०– 69*